सृजन से संवाद

तेजपाल सिंह 'तेज' का साहित्य
आर्थिक सरोकारों का दर्शन

डॉ. देवी प्रसाद वर्मा
नीमका थाना, राजस्थान
मो0- 9414777031

भारतीय समाज की यह विडंबना ही है कि आज भी यहाँ बहुत से ऐसे लोग हैं जो बराबरी के लिए समाज में मौजूद भेदभाव से संघर्ष कर रहे हैं। जब हम भारतीय समाज की प्रवृति और दशा का विश्लेषण करते हैं, तो हम पाते हैं कि एक तरफ तो सत्ता और संसाधनों पर कुछ लोगों (अल्पजन) का अधिकार है, वहीं दूसरी तरफ बहुसंख्यक (बहुजन) आबादी सत्ता और संसाधनों में हिस्सेदारी से वंचित है।

भारतीय समाज में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक आदि ऐसे वर्ग हैं, जो आज भी समाज की मुख्यधारा में शामिल नहीं हैं। इन वर्गों के पास साधन-सुविधाओं का अभाव है। इन वर्गों की स्थिति सुधारने, इन्हें मुख्यधारा में शामिल करने हेतु अनेक संवैधानिक प्रावधान किए गए हैं। विभिन्न सरकारों ने भी समय-समय पर आयोगों का गठन किया है। इन आयोगों ने इन वर्गों की स्थिति का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट्स सरकार को सौंपी हैं। यद्यपि वर्गों की स्थिति में परिवर्तन अवश्य हुआ है, परन्तु वह नाकाफी है। इन्हीं वर्गों के साथ अन्य भी बहुत से लोग हैं, जिन्हें आवश्यक सुविधाएं भी मयस्कर नहीं हैं। आज भी बहुत से लोग आर्थिक विषमता के शिकार हैं।

कवि तेजपाल सिंह 'तेज' दीन-दुखियों तथा शोषितों-पीड़ितों के प्रति सहानुभूति ही नहीं रखते अपितु वे उनके प्रति संवेदना ज्यादा प्रकट करते हुए दिखाई देते हैं। दरअसल सहानुभूति वह अवस्था है, जिसमें मनुष्य किसी की कष्टपूर्ण अनुभूति का अनुभव शुद्ध हृदय से करता है और उससे उसी प्रकार प्रभावित होता है, जिस प्रकार दूसरा व्यक्ति प्रभावित हो रहा हो। अनुभूति की भावना में अनुभूति रखने वाले व्यक्ति को सन्तुष्टि मिल सकती है, लेकिन संवेदनाओं में असंतुष्टि का भाव बना ही रहता है। संवेदना पूर्णता के अर्थ में एक समूची वेदना है.... एक तड़प है। संवेदनाओं में पूर्णता की अपेक्षा रहते हुए भी अभाव का संकट बना रहता है, असंतुष्टि बनी रहती है। इन अर्थों में कवि तेजपाल सिंह 'तेज' की कविताओं में समाज के गरीब, निरीह और दलित-दमित वर्ग के प्रति संवेदना का भाव ज्यादा है।

मानव एक विवेकशील प्राणी है। वह अपना हित-अहित सब समझता है। एक आदर्श स्थिति के अनुसार मनुष्य को न केवल अपने स्वार्थ का ही ध्यान नहीं रखना चाहिए वरन् सभी के हितों को ध्यान में रखकर काम करना चाहिए। कुछ व्यक्तियों में अपने हित-साधन की प्रवृति बहुत अधिक प्रबल होती है। ऐसे लोग अपने छोटे से लाभ के लिए दूसरे को बहुत अधिक नुकसान करने पर आमादा हो जाते हैं। कवि तेजपाल 'तेज' के अनुसार आज का इंसान इतना स्वार्थी हो गया है कि उसका अपना स्वार्थ पूरा होना चाहिए भले ही दूसरे का नुकसान हो। उसका अपना घर आबाद रहना चाहिए, भले ही दूसरे का घर जले, तो जले। कवि 'तेज' इस स्वार्थपूर्ण स्थिति को बहुत ही कुशलता से बयान करते हुए लिखते हैं:-

'छीनकर मुँह से निवाला आपने,
शर्म को घर से निकाला आपने।

चंद चुपड़ी रोटियों के वास्ते,
स्वयं को ही बेच डाला आपने।

शहर अपना जगमगाने के लिए,
गाँव सारा फूंक डाला आपने।'

तेजपाल सिंह 'तेज' के अनुसार गरीबी और भूखमरी किसी क्षेत्र विशेष की समस्या नहीं है, बल्कि हर गाँव-शहर में गरीबी के भयावह हालात देखे जा सकते हैं। इनके गजल संग्रह 'तूफां की जद में', पृ. सं. 41 पर लिखी गई ग़ज़ल 'हर चौराहे भूख खड़ी है' में इन्होंने न केवल गरीबी और भूखमरी का चित्रण है अपितु इसके दुष्प्रभावों को भी दर्शाया गया है:-

'शहर-शहर, बस्ती-वस्ती,
हर चौराहे भूख खड़ी है,
दुल्हनिया सी सजी-धजी कि
हरसू सबसे आँख लड़ी है।

बात-बात पर नभ से बोझिल,
आग के गोले उगल रही है,
वर्षों से भूखी हो जैसे,
मानवता पर टूट पड़ी है।

माथे पर बेम्याद लकीरें,
आँखें हैं कि तल्ख समन्दर,
प्रलंकारी कृत्य घिनौने,
करके सीना तान खड़ी है।

कूकेगी अब क्या कोयलिया,
कूकेगा अब कहाँ पपीहा,
जंगल-जंगल आग लगी है,
मृत्यु तंबू तान खड़ी है।

जला आसमां दरकी धरती,
जीवन रूठा सांसे टूटी,
अब क्या महकेगी पुरवैया,
बगिया-बगिया त्रस्त पड़ी है।'

कवि का हृदय इतना संवेदनशील होता है कि वह छोटी से छोटी बात के प्रति भी भावुक हो उठता है। जिनके पास सब साधन-सुविधाएं हैं, उन्हें कहीं अभाव दिखाई नहीं देता है या यूँ कहें कि उन्हें दूसरों के अभावों की कोई चिन्ता नहीं होती है। बहुत से ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो अभावों का सामना तो कर रहे होते हैं किंतु वो अभावों से विमुख होकर समर्थ होने का भाव भी पालते रहते हैं। बहुत-सी ऐसी भी बस्तियां और गाँव हैं, जहाँ आज भी मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं। दूसरी ओर बहुत से ऐसे शहर हैं जहाँ पर सभी साधन-सुविधाएं विद्यमान/मौजूद हैं। कवि कहना चाहता है कि ऐसी जगहों की चकाचौंध और विकास को देखकर सम्पूर्ण देश के विकास का अनुमान लगाना उचित नहीं है। ऐसे लोग जो कुछ विकसित लोगों, बस्तियों, गाँवों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करके सम्पूर्ण देश के विकसित हो जाने की बात करते हैं, उन्हें आड़े हाथों लेते हुए कवि 'तेज' व्यंग्यात्मक रूप से कहते हैं:-

'पहनने को पहनते हैं कोट पर,
कोट में अपने मगर अस्तर नहीं।

चन्द गमले देखकर कहने लगे,
आज धरती पर कहीं बंजर नहीं।'

तेजपाल सिंह 'तेज' सामाजिक व्यवस्था, राजनीति, सत्ता, सम्प्रदायवाद की कड़ी आलोचना करते हैं। 'तेज' की कविता में भेदभावपूर्ण व्यवस्था के प्रति आक्रोश दिखाई देता है। 'तेज' झौंपडियों और महलों में रहने वाले लोगों के जीवन और कलाचार की तुलना करते हुए एक गजल में कहते हैं:-

'महलों में हलचल है नयी हवाओं की,
कि छप्पर बूढ़ी संस्कृति को ढोते हैं।'

आज भी देश में बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनके सिर पर छत नहीं है, जो सुते आसमान के नीचे जीवन यापन करने को मजबूर हैं। उन लोगों को यह पीड़ा तो है ही कि उनके पास रहने को घर नहीं है परन्तु कवि के अनुसार उन्हें इस बात की भी पीड़ा है कि उन्होंने अपनी मेहनत से दूसरे लोगों के लिए बहुत से घर बनाए हैं और इन्हीं घर निर्माताओं के पास रहने को आशियाना नहीं है।

तेजपाल सिंह 'तेज' को ऐसे गरीब और वेबस लोग आज भी मशालें थामे हुए ही दिखाई देते हैं। कवि 'तेज'

इनकी व्यथा का चित्रण करते हुए लिखते हैं–

'बैठे हैं हम थामे मशालें आज तक,
ना कर सके घर में उजाले आज तक।

यों उम्र भर जारी रही मेहनतकशी,
ना बन सके अपने शिवाले आज तक।'

देश में विभिन्न स्थानों पर अनेक लोग झुग्गी-झोंपड़ियों में जीवन-यापन करने को मजबूर हैं। मजदूर वर्ग को यह समझ में नहीं आता कि जब वह शहर में बनने गगनचुम्बी इमारतों का निर्माता हैं, फिर उसका निवास शहर से हटकर क्यों है। कवि इनकी पीड़ा को अपने शब्दों में उजागर करते हुए कहता है:–

'मैं ही तेरे शहर की बुनियाद हूँ लेकिन,
तेरे शहर से मेरी झोपड़ी हटकर क्यों है।'

जब कोई साधन-संपन्न व्यक्ति अपने प्रियजनों को खत लिखता है। उस खत में वह अपनी कुशलता और अन्य बहुत से समाचारों के साथ खत पाने वाले के लिए भी अपनी ओर से बहुत-सी बातें लिखता है। प्रेयसी अपने प्रियतम को खत लिखती है तो वह प्यार प्रेम की बातें लिखती है। व्यापारी अपने व्यापार के संबंध में लिखता है, (यद्यपि पत्रलेखन का आधुनिक युग में महत्त्व कम होता जा रहा है) परन्तु गरीब व्यक्ति तो पत्र में भी अपनी गरीबी का ही चित्रण करता है। अपने लिए कहीं रोजगार की बात करता है। खत पाने वाले से अपने लिए काम तलाश करने की बात करता है। वैसे आजकल खत का स्थान इलैक्ट्रोनिक मीडिया ने ले लिया है। गरीब व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा सवाल रोटी का होता है। उसके लिए चाँद सुन्दरता का प्रतीक नहीं होता, वरन् चाँद उसके सामने गोल-गोल रोटी के रूप में उभरकर आता है:–

'कोई विचारा खत लिखता है,
खत में अपना कद लिखता है।

चंदा को लिखता है रोटी,
रोटी को मकसद लिखता है।'

यूँ तो देश के आजाद होने के बाद से ही गरीबी दूर करने के वायदे लगातार किए जा रहे हैं, परंतु न जाने क्या बात है कि गरीबी समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही है। गरीबी दूर करने का नारा आज भी दिया जा रहा है। प्रत्येक शासन गरीबी मिटाओ का नारा देता है। कवि का मत है कि यह राजनैतिक दलों द्वारा सत्ता पाने हेतु एक नारा मात्र है:–

'गो भूख के मारे भी हैं जिन्दा यहाँ,
भूख का मसला मगर मसला तो है।'

तेजपाल सिंह 'तेज' ने अपनी गजलों व कविताओं में ही नहीं अपितु अपने गद्य लेखन में भी शोषण का सदैव विरोध किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में शोषकों और पाखण्डियों पर तीखे प्रहार किए हैं। उनकी कविताओं में मानवीय संवेदना का तीव्र स्फुरण हुआ है।

'मुद्दा रोटी का जहाँ का तहाँ रहा,
थपकियाँ दे-दे के सुलाए गए हैं हम।'

कुछ वर्षों पहले हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था। गुलामी बड़ी कष्टदायक होती है। अंग्रेजों की नीति तो शोषण करने की ही थी। स्वतंत्रता के दीवाने असंख्य देश भक्तों ने अपने जीवन की कुर्बानी देकर देश को आजादी दिलाई। आजाद भारत में गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याए नहीं रहेंगी, ऐसी आशा थी किंतु वह आशा पूरी न हो सकी। भारत में भुखमरी, बीमारी, बेरोजगारी जैसी अनेक समस्याएँ आज भी हैं। कवि 'तेज' की कविताओं में देश के नव-निर्माण तथा नव-जागरण का भाव सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है परंतु कवि देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, गरीबी, बेकारी, भुखमरी, अन्याय, अत्याचार का भी खुलासा करता है। सबका अपना-अपना देश है क्योंकि सभी का जीवन-स्तर एक समान नहीं है। एक समान तो क्या, गरीबी और अमीर के जीवन-स्तर में जमीन-आसमान का अन्तर है। तेजपाल सिंह 'तेज' अपनी गजल 'खट्टे-मीठे कड़वे देश' में इस भयानक सच को अभिव्यक्त करते हुए कहता है:–

'खट्टे-मीठे कड़वे देश,
सबके अपने-अपने देश।

सत्ता की मारा-मारी में,
दूर हुआ आँखों से देश।

गैरों की चर्चा क्या करना,
जूझ रहा अपनों से देश।

सोने की चिड़िया तुम जानो,
हम जाने भिखमंगे देश।'

मताधिकार का प्रयोग करना सभी व्यक्तियों का हक है। कवि के अनुसार वोटों के चलते राजनेता चुनावों के समय जनता से अनेक वादे करते हैं, परंतु जीत हासिल कर लेने के बाद इन वादों को भूल जाते हैं। गरीब व्यक्ति वोट की फसल के समान है, जो समय आने पर काट ली जाती है। कवि आजादी के बाद से बदले शासन-प्रशासन का जिक्र करते हुए लिखता है कि इन गरीब लोगों के वोटों ने बहुत से राज

बदल दिए हैं, परन्तु इनकी गरीबी दूर नहीं हो पा रही है। आजाद देश में बेरोजगारी की समस्या हल तो नहीं हुई, बढ़ और गई है। सुशिक्षित लोगों को एक तो रोजगार मिलता ही नहीं, मिलता है तो बहुत कम। उनके लिए भी परिवार का निर्वाह करना असंभव-सा होता है। बहुत से परिवार आज भी ऐसे हैं, जिन्हें दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पा रही हैं। कवि ऐसे साध नहीन लोगों की व्यथा को उजागर करते हुए लिखता है:-

'सियासतें बदली मगर दफ्तर नहीं बदले,
कि हुक्मरानी कोट के अस्तर नहीं बदले।

भुखमरी के वोट ने बदले हैं तख्तो-ताज,
पर भुखमरी के मील के पत्थर नहीं बदले।

जेरे बहस है मुद्दआ रोटी का आज भी,
अभी तलक तो भूख के बिस्तर नहीं बदले।'

लगभग सभी गरीब लोगों के जीवन की एक-सी कहानी है। सभी अभाव में पैदा होते हैं और इनमें से बहुत से अभाव में ही इस दुनिया से रुखस्त हो जाते हैं। कवि साधनहीन परिवार के व्यक्ति की व्यथा और पारिवारिक पृष्ठभूमि का बयान करते हुए लिखता है:-

'रोटी के बदले यां अक्सर,
एक अदद उपवास मिला।

फाकामस्ती का कुछ-कुछ तो,
मुझको है इतिहास मिला।'

असमान वितरण बहुत सी समस्याओं की जड़ है। इस असमान वितरण का मुख्य कारण है, भ्रष्टाचार। वैसे भ्रष्टाचार शब्द बहुत अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों में शुमार है। जहाँ कहीं भी देखें भ्रष्टाचार नजर आता है। कुछ लोगों का तो मानना है कि भ्रष्टाचार से वे ही व्यक्ति दूर हैं, जिन्हें अवसर नहीं मिला है। कवि 'तेज' की समस्या है कि उन्होंने पढ़ तो बहुत लिया है, परंतु वे इस दुनिया को समझ नहीं पाए हैं, जो कहती कुछ है और करती कुछ है या दिखती कुछ और है तथा होती कुछ और है। कवि के अनुसार आज लोकतंत्र में चारों ओर भ्रष्टाचार दिखाई देता है:-

'पग-पग जो निर्वाध बढ़ा है,
धनवानों के हाथ चढ़ा है।

बाँच न पाया इस दुनिया को,
पढ़ने को यूँ बहुत पढ़ा है।

सब कुछ कड़वा-कड़वा सा है,
कोई करेला नीम चढ़ा है।

लोकतंत्र के गलियारों में,
भ्रष्ठजनों को भाव बढ़ा है।'

कभी अनावृष्टि के कारण तो कभी अतिवृष्टि के कारण किसानों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नदियों में आने वाली बाढ़ के कारण किसानों की पकी-पकाई फसल बर्बाद हो जाती है। कवि का मानना है कि इन प्राकृतिक आपदाओं के लिए सरकार और शासन-प्रशासन भी बहुत हद तक जिम्मेदार हैं, जो इन समस्याओं का स्थाई हल नहीं निकालते हैं:-

'लील गई चढ़ती नदी पका-पकाया धान,

भूख-प्यास की मार से, टेड़ा भया किसान।'

धीरे-धीरे बिक गया घर का सारा माल,

होरी खाक उड़ात है खाली पड़ी दुकान।

यां चोरों की पंचायत है, गीदड़ हैं सरपंच,
थाम हाथ उल्टी कलम, लिखते चोर विधान।'

ऐसे लोग, जिनके पास न रहने को घर है और न पहनने को पर्याप्त वस्त्र, ऐसे अभावग्रस्त लोगों की पीड़ा को बयान करते हुए तेजपाल सिंह श्तेजश लिखते

'पटरी बिस्तर, ईंट का तकिया,
ता पर सिर घर सोवे हरिया।
कि टूटी जूती, फटा घाघरा,
कब तक सीवें भूखी धनिया।'

धनी और निर्धन में हमेशा टकराव रहा है। हमेशा दो वर्ग विद्यमान रहे हैं, एक साधन सम्पन्न, जिसे उच्च वर्ग कहा जाता है और दूसरा साधनहीन, जिसे निम्न वर्ग के नाम से जाना जाता है। कवि के अनुसार इस भौतिकतावाद की चकाचौंध में इंसानियत रुखस्त हो गई है। भौतिकतावाद का प्रभाव शहरों के साथ ही गाँवों में भी दिखाई देने लगा है:-

'गाँवों में नए दौर का प्रभाव देखिए,
हर-नजर हर सिम्त यां बदलाव देखिए।

इंसानियत यूँ ही तो ना चुक्ता हुई,
निर्धन का धनवान से टकराव देखिए।'

तेजपाल सिंह 'तेज' ने आर्थिक शोषण को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। इन्होंने शोषण से होने वाले दुष्प्रभावों के करुणामय चित्र प्रस्तुत किये हैं। अनके अनुसार यह बात बहुत ही चिंताजनक है कि एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य का शोषण करता है। श्रमिक मेहनत करता है, परन्तु उसे अपने श्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। पूंजीपतियों द्वारा उसका शोषण कर लिया जाता है। कवि लिखता है:-

'काम तो है पूरा का पूरा,

आधी मगर मजूरी है।

रोटी के मुद्दे पर चर्चा,
सदियाँ गई, अधूरी है।

जीना तो है एक चुनौती,
मरना एक मजबूरी है।'

समाज में अनेक अन्य समस्याओं के साथ एक बड़ी समस्या कर्ज की भी है। कवि तेजपाल सिंह 'तेज' के अनुसार कर्ज लेना तो आसान है, परन्तु उसे चुकाना बहुत मुश्किल होता है। परंतु गरीब के लिए न तो कर्ज लेना आसान है और न उसका चुकाना। यह अलग बात है कि कुछ लोगों को घर बैठे कर्ज मिलता है। गरीब व्यक्ति जब कर्ज लेता है तो उसके लिए उसे चुकाने की समस्या हो जाती है क्योंकि न तो उसके पास कोई स्थाई रोजगार होता है और न ही पर्याप्त मजदूरी। कवि ऐसे कर्जदारों की समस्याओं को सामने रखते हुए लिखता है:-

'बहुत मुश्किल से जिया जाता है,
हक मिलता नहीं लिया जाता है।

कर्ज लेना तो सहज है लेकिन,
कर्ज किश्तों में दिया जाता है।'

दैनिक जीवन की चक्की में पिसते आम आदमी पर गजलकार की बड़ी सूक्ष्म और पैनी नजर है। ग़ज़लकार 'तेज' ने गरीबों की समस्या को बहुत सीधे और सहज शब्दों में चित्रित किया है:

'भूख की बेटी पतकर ज्यूँ जवान हुई,
रोटी उसको बुरी नजर से ताक रही है।'

...

'हरसू दौलत का तमाशा है वहीं,
खाली जेबों में पता क्या रखना।'

शोषित और गरीब सामान्य स्थितियों में भी बहुत मुस्किल से जीवन-यापन कर पाते हैं। गरीब आदमी को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती। अभावग्रस्त लोगों के पास घर में आटा न होने की वजह से चूला न जल सकने के कारण भूखे ही रहना पड़ता है। कवि इन विदूपताओं पर प्रकाश डालते हुए करता है:-

'राजनीति चूल्हे पर चढ़के नाच रही है,
और चूल्हे वाली महंगाई से कोप रही है।'

...

'कोई करवट पे करवट बदलता रहा,
कोई बिस्तर पे बिस्तर बदलता रहा।

कोई लिखता रहा फूल पर ताजगी,
कोई फूलों को शवभर मसलता रहा।'

कवि उपेक्षित, दलित तथा शोषित जन-समुदाय का पक्षधर और पूंजीवादी व्यवस्था के घोर विरोधी है। भ्रष्टाचार, आडम्बर, साम्प्रदायिकता, भाषावाद और सदियों के प्रति आक्रोश 'तेज' की सभी रचनाओं में देखा जा सकता है। उनकी अधिकतर रचनाओं में समाज में व्याप्त कुरीतियों और विद्रूपताओं का विरोध किया गया है। बहुत से राजनेता विभिन्न अवसरों पर अपने भाषणों और बयानों में उन बर्गे में दीपक जलाने की बात करते हैं. जसे अंधेरा है परंतु वास्तविकता इसके विपरीत है। कवि 'तेज' ऐसी बस्तियों का जिक्र करते हैं जो विकास में कोसों दूर हैं। कवि इसका कारण राजनैतिक इच्छाशक्ति और भ्रष्टाचार को मानत हुए कहता है:-

'अन्तर में कुष्ट भाव है, आँखों में सादगी,
हर सिम्त भ्रष्टाचार की ऊँची दुकान है।

जहाँ मुद्दतों से कोई भी आया-गया नहीं,
इन बस्तियों के बीच एक ऐसा मकान है।'

कवि व गजलकार तेजपाल सिंह 'तेज' की रचनाओं को पढ़ने के बाद कुछ हद तक यह महसूस हुआ कि किसी भी पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा, उनकी अपनी पीड़ा है। स्वयं कवि का बचपन भी अभावों में ही गुजरा है तथा रोजी-रोटी पाने के लिए इन्हें भी अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा है। इनकी अनेक गजलों और कविताओं का अध्ययन करते समय लगता है कि जैसे कवि ने अपनी ही व्यथा प्रकट की हो। कवि का मानना है कि गरीब और शोषित व्यक्ति शोषण रूपी तिलिस्म में इस प्रकार फँसा हुआ है कि उसका इस शोषण की चक्की से निकल पाना आसान प्रतीत नहीं होता है:-

'अश्क पीकर बचपना हमने जिया फुटपाथ पर,
धूप खाकर उम्र का हर पल जिया फुटपाथ पर।

कि ये कोई मिसरा नहीं दरअसल एक सत्य है,
बाकसम हर मृत्यु को हमने जिया फुटपाथ पर।

गो दर्द का दरिया, मेरे आगोश में बहता रहा,
पे दर्द की हर थाह को हमने जिया फुटपाथ पर।'

कवि ने जनता की गरीबी, भूखमरी का चित्रण बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। कवि द्वारा किया गया यह चित्रण बहुत ही डरावना है। कवि ने अपनी कविताओं का विषय समाज के उपेक्षित तबके को बनाया है। उनके अनुसार रात-दिन मेहनत करते-करते, गंदी और उपेक्षित बस्तियों में रहते-रहते, गरीबों का मनोबल टूट जाता है।

रोजी–रोटी की तलाश में केवल और केवल शहर के होकर रह जाते है। किसी भी हारी बीमारी के हालात में अपने पुश्तैनी गाँव/निवास की ओर कदम भी नहीं रख पाते। ऐसा भी देखा जाता है कि उनके बूढ़े माँ–बाप उनसे मिलने की चाहत में दुनिया छोड़ जाने को मजबूर होते हैं, किंतु उनके लाचार बेटा–बेटी अपनी मजबूरियों और व्यस्तताओं के चलते कुछ भी न करने को मजबूर होते हैं। शहर में रहने के बावजूद भी बहुत से लोग शहरों की मूलभूत सुविधाओं और चकाचौंध से दूर रहते हैं, कारण कि उन्हें अपनी रोजी–रोटी कमाने से ही फुरसत नहीं मिलती। शहर में रहकर भी बहुत से व्यक्ति सही मायने में जीवन नहीं जी पाते हैं। मजदूर वर्ग शहर की गन्दी बस्तियों में साकर शहरी तो जरूर बन जाता है, परन्तु उसके पुश्तैनी हालातों में विशेष परिवर्तन नहीं आ पाता।

गाँवों में आज भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपनी रोजी–रोटी के चक्कर में ही लगे रहते हैं। इन्हें कहीं भी आने–जाने का अवकाश नहीं मिलता है। अनेक लोगों ने दिल्ली जैसा शहर तो क्या अपने आस–पास का कोई बड़ा कस्वा भी नहीं देखा है। ऐसे साधनहीन लोगों के लिए देश की राजधानी दिल्ली जाकर राजपथ देखना किसी सपने से कम नहीं है। तेजपाल सिंह श्तेजश की अधोलिखित पंक्तियों में इस स्थिति का बहुत ही संवेदनापूर्ण चित्रण देखने को मिलता है:–

‘फाकाकशी को ही जिया है आज तक मैंने,
कि देखा नहीं है शहर क्या बाजार तक मैंने।

कहने को हम आजाद हैं, आबाद हैं, लेकिन,
है देखी नहीं दिल्ली कभी, ना राजपथ मैंने।’

कवि शोषण को समाप्त करने की दिशा में जमकर पत्थर उछालता है, शोषण से समाज को मुक्त करना चाहता है। तेजपाल सिंह ‘तेज’ की रचनाओं पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण का प्रभाव भी है। गरीबी, बेबसी और लाचारी के शिकार निम्न वर्ग की त्रासदी को तेजपाल सिंह ‘तेज’ ने अत्यंत मार्मिक संवेदना के साथ व्यक्त किया है:–

‘फटी जेब से खाली थैला,
घर से मैं बाजार गया।

पर आने वाला नहीं आया,
यूँ किया घरा बेकार गया।

‘तेज’ भला करता भी क्या,
खुद ही खुद से हार गया।’

वंचित वर्ग की समस्या है कि वह रात–दिन मेहनत करता है, उसके बावजूद भी वो अपना और अपने परिवार का पेट नहीं भर पाता और दूसरी तरफ एक ऐसा वर्ग भी है जो बिना मेहनत या बहुत ही कम मेहनत में ही सब सुविधाओं का उपभोग करता है। जब ऐसा वर्ग गरीबों के हक और अधिकार तय करता है, तो उससे बहुत उम्मीद नहीं की जा सकती। उनके द्वारा बनाई गई योजनाएं कागजों पर ही होती हैं, घरातल पर नहीं उतर पाती। कवि ने गरीबों की इस वेदना पर दृष्टिपात करते हुए लिखा है:–

‘आज सूरज जमी पर उगा है यहाँ,
कागजों पर बहुत कुछ हुआ है यहाँ।

किसी ने अँधेरों को दी जिंदगी,
चाँदनी को किसी ने ठगा है यहाँ।

दाल–आटे की कीमत गगन हो गई,
साँस लेने को है हवा भी कहाँ।’

अधोलिखित गजल ‘जल रही है ये जमीं और गगन है जल रहा’ में कवि ने एक शोषित, पीड़ित व श्रमनिष्ठ व्यक्ति की विवशता और वेदना का मार्मिक चित्रण किया है। मानवीय संवेदना और भावगत सौंदर्य की दृष्टि से इस ग़ज़ल का विशेष महत्त्व इसलिए भी है कि इसका रचनाकार स्वयं भी एक ऐसे सामाजिक परिवेश से आता है, जहाँ यह सब होते हुए उसने अपनी खुली आँखों से देखा है:–

‘जल रही है ये जमीं और गगन है
जल रहा,
चिलचिलाती धूप में है तन किसी
का जल रहा।

लड़खड़ाता, हांफता, नंगा बदन बोझा
लिए,
दो जून रोटी के लिए तपती सड़क
पे चल रहा।

जिनके हाथों से बने इस शहर के
महलो–मकां,
उनके ही घर का झोंपड़ा है फूस को

तरस रहा।

पल भर इन्हें भी देखलो ए! शहर के मुर्दादिलो,
दीपक तुम्हारे 'तेज' का जिनकी
वजह से जल रहा।'

शोषित और गरीब व्यक्ति की एक समस्या यह भी है कि उसकी परेशानियों को दूर करने वाला कोई नहीं है। कहने को ये भारत देश सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, किंतु हो गया है बहुत भ्रष्ट। भ्रष्टाचार पर बात करने की बात तो अलग है, दुनिया के इस कोलाहल में उसका करुण विलाप सुनने वाला कोई भी नहीं है। ऐसे में 'तेज' सवाल करते हैं कि:-

'ये कैसी बस्ती है?

खेती है ना क्यारी है,
भूखी हरप्यारी है,
धनपत के पाँवों में,
अंबर है ना धरती है।

ये कैसी बस्ती है?'

'तेज' के काव्य में पौरुष, शान्ति और तेजस्वी भावों के साथ-साथ विद्रोह का स्वर भी बखूबी सुना जा सकता है। कवि जन्म से ही विद्रोही रहे हैं। अपनी इसी विद्रोही भावना के कारण उन्होंने अनेक रचनाओं में साफ-साफ कहा है कि शोषण को सहना पाप है। जो मनुष्य शोषण को सहता है, वह एक प्रकार से मनुष्यता को समाप्त कर देता है। कवि ने शोषण को मनुष्यता का मरण बतलाते हुए कहा है कि शोषण के खिलाफ सदैव विद्रोह करना चाहिए। अपनी विविध कविताओं में कवि ने एक प्रकार से विद्रोह की भावना को ही ओजस्वी भाषा में प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार कवि जब प्रतिशोध की बात करता है तब भी वह विद्रोही का ही पक्ष लेता है। कवि ने विद्रोह और प्रतिशोध को शोषित मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार माना है:-

'सुनो! तुम्हारे महलों में
मेरे खून से सनी ईंटें लगी हैं

हवाओं में
अभी भी मेरे पसीने की गंध बाकी है

बस! इतना समझ लो
और
इससे पहले कि मेरा सीना फट पड़े
छोड़ दो मेरा शोषण
बन जाने दो मेरा घर।'

कवि मानता है कि शोषण मानव के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है, परंतु इसी के साथ वह कहता है कि इस शोषण को मिटाने के लिए कोई बाहरी ताकत या उपाय काम में आने वाला नहीं है। इस शोषण तंत्र को समाप्त करने के लिए शोषितों को ही आगे आना पड़ेगा। कवि 'तेज' किसी मसीहा, किसी अन्य व्यक्ति का इन्तजार न कर शोषण को समाप्त करने के लिए स्वयं संघर्ष करने को तैयार दिखाई देते हैं। वे शोषकों को शोषण बन्द करने की सलाह देते हैं और अगर वे शोषण करना बन्द नहीं करते हैं तो उन्हें परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने की चेतावनी देते हैं:-

'सुनो! इन शब्दों को समझ लो
छोड़ दो मेरा शोषण
इससे पहले कि ये शब्द बोलने लगें
मुझे मेरी सत्ता लौटा दो
अभी भी समय है
सौंप दो मुझे मेरा मान-सम्मान
अन्यथा बहुत भारी पड़ेंगे ये शब्द।'

कवि 'तेज' ने भूखे, नंगे, दबे-कुचले, शोषितों को अपनी कविता का विषय ही नहीं बनाया, अपितु कवि ने शोषितों और गरीबों के दुख और पीड़ाओं को पूर्ण संवेदना के साथ अपनी कविता के माध्यम से समाज के समक्ष भी रखा है। कृषि न केवल गरीबों, पीड़ितों की समस्याओं को समाज के समक्ष रखना चाहता है, अपितु वह विषमता की इस कहानी को समाप्त ही कर देना चाहता है।

'दुल्हिन होती तो मैं सजती,
पायलिया के जैसी बजती।

लेकिन मैं रोटी की मारी,
धनीराम से कैसे बचती।

गुरबत में इज्जत का लुटना,
रही देखती सारी बस्ती।

पैसे से कानून बिके हैं,
पैसा है तो सत्ता सस्ती।

बातों से नहीं बात बनेगी,
यार! उठा हाथों में दस्ती।'❑